उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय एक

आवश्यक व्याख्यात्मक दृष्टिकोण

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

I. परिचय (0:24) 4

II. हमारा असमंजस (2:02) 4

A. असमंजस के स्त्रोत (2:59) 4

1. भविष्यवाणी की पुस्तकें (3:18) 4

2. कलीसिया (4:17) 5

B. असमंजस के परिणाम (5:16) 5

1. अत्याचार (5:27) 5

2. उदासीनता (7:19) 5

III. भविष्यवक्ता का अनुभव (10:10) 6

A. मानसिक दशा (10:54) 6

B. प्रेरणा (12:04) 7

1. यांत्रिक प्रेरणा (12:14) 7

2. सचेत प्रेरणा (12:47) 7

C. समझना (13:51) 8

IV. मूल अर्थ (16:16) 9

A. प्रचलित व्याख्या (16:59) 9

1. परमाणविक (17:23) 9

2. गैरऐतिहासिक (17:56) 10

B. सही व्याख्या (19:43) 10

1. साहित्यिक संदर्भ (20:23) 10

2. ऐतिहासिक संदर्भ (21:38) 10

V. नए नियम के दृष्टिकोण (23:20) 11

A. अधिकार (23:50) 11

1. भविष्यवक्ताओं के लेख (24:05) 11

2. भविष्यवाणिय अभिप्राय (24:58) 11

B. प्रयोग (28:01) 12

1. भविष्यवाणिय अपेक्षाएं (28:33) 12

2. भविष्यवाणिय पूर्णता (29:30) 13

VI. निष्कर्ष (32:40) 14

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 15

उपयोग के प्रश्न 20

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:24)

II. हमारा असमंजस (2:02)

पासवान और अन्य मसीही शिक्षक भी पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के चौकस स्पष्टीकरण को नजरअंदाज करते हैं क्योंकि वे बाइबल के इस भाग के प्रति काफी असंमजस में रहते हैं।

A. असमंजस के स्त्रोत (2:59)

1. भविष्यवाणी की पुस्तकें (3:18)

पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली भविष्यवाणी की पुस्तकें शायद समझने के लिए बाइबल के सबसे मुश्किल भाग हैं।

राजा, राष्ट्र, युद्ध और अन्य घटनाएं इतनी जटिल हैं कि उन्हें समझ पाना हमारे लिए बहुत ही मुश्किल होता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. कलीसिया (4:17)

जब पुराने नियम की भविष्यवाणी की व्याख्या करने की बात आती है, तो इसमें सामंजस्य नहीं परन्तु असहमति ही दिखाई देती है।

B. असमंजस के परिणाम (5:16)

1. अत्याचार (5:27)

इसमें काफी असहमति और असंमजस पाया जाता है कि तथाकथित "भविष्यवाणी विशेषज्ञ" असंमजस को व्यवस्थित करने का प्रयास करते हैं।

तथा-कथित विशेषज्ञों द्वारा मसीहियों का आसानी से शोषण किया जाता है।

2. उदासीनता (7:19)

कई मसीही भविष्यवाणी के प्रति अपनी धारणा में कई चरणों से होकर गुजरते प्रतीत होते हैं। पहले पहल तो वे बड़े उत्साह के साथ आरंभ करते हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

विश्वासी स्वयं को मुश्किल में पाते हैं।

कई विषयों में वही मसीही बाइबल के इस भाग को समझने में हार मान लेते हैं।

हमें पुराने नियम की भविष्यवाणी को सीखने की जरूरत है ताकि :

- हर प्रकार की धर्मशिक्षा के द्वारा हम पर अत्याचार न हो।
- हम उदासीनता को दूर कर सकें।

III. भविष्यवक्ता का अनुभव (10:10)

भविष्यवक्ताओं के अनुभव के विषय में कम से कम तीन अवधारणाएं सामने आती हैं।

A. मानसिक दशा (10:54)

अनेक लोग ऐसा दर्शाते हैं कि जब भविष्यवक्ताओं को भविष्यवाणियां प्राप्त हुईं तो वे अपने मानसिक संतुलन में नहीं थे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

कुछ गलत रूप से यह सोचते हैं कि बाइबल के भविष्यवक्ता ने होश ही खो दिए थे और कनानी और प्राचीन एवं आधुनिक जगत के भविष्यवक्ताओं के समान बेसुध अवस्था में चले गए थे।

B. प्रेरणा (12:04)

1. यांत्रिक प्रेरणा (12:14)

भविष्यवक्ता प्रकाशन के निर्जीव साधन नहीं थे। वे परमेश्वर के यांत्रिक प्रवक्ता नहीं थे।

2. सचेत प्रेरणा (12:47)

पवित्र आत्मा ने भविष्यवक्ताओं के लेखनों को प्रेरित किया ताकि उनमें कोई गलतियां न हों।

परमेश्वर ने व्यक्तित्वों का और मानवीय लेखकों के विचारों और दृष्टिकोणों का इस्तेमाल किया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. समझना (13:51)

जो भविष्यवक्ता कहते थे उसे समझते थे।

भविष्यवाणिय ज्ञान के विषय में सामान्यतः गलत रूप में समझे जाने वाले अनुच्छेद :

- दानिय्येल 12;8

  दानिय्येल ने जो सुना और लिखा था वह समझ गया था; उसे शब्दों का पता था, उसे व्याकरण पता थी। परन्तु उसे पूरी तरह से यह नहीं पता था कि भविष्यवाणी कैसे पूरी होगी।

- 1 पतरस 1:11

  पुराने नियम के भविष्यवक्ता समय और परिस्थितियों के विवरण से अनजान रहे,परन्तु जो वे कह रहे थे उसके बारे में जानते थे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

IV. मूल अर्थ (16:16)

- पहले हमें अनुच्छेद के मूल अर्थ को खोजना और फिर उस मूल अर्थ के अधिकार में स्वयं को समर्पित कर देना आवश्यक है।

- पुराने नियम की भविष्यवाणी के संदर्भ में हम इस मूलभूत व्याख्यात्मक सिद्धांत को भूल जाते हैं।

A. प्रचलित व्याख्या (16:59)

1. परमाणविक (17:23)

मसीहियों के लिए यह एक आम बात है कि वे भविष्यवक्ताओं को आपस में अविभाजित संकलनों के रूप में पढ़ते हैं।

अधिकांश सुसमाचारिक लोग भी भविष्यवक्ताओं के ऐतिहासिक संदर्भ को महत्व नहीं देते।

मसीही वह देखते हैं जो हमारे संसार में हो रहा है और हम भविष्यवाणी के खाली कनस्तरों को वर्तमान, ऐतिहासिक घटनाओं से भरने का प्रयास करते हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. गैरऐतिहासिक (17:56)

लेखक और श्रोताओं के ऐतिहासिक संदर्भ की परवाह किए बिना पढना।

B. सही व्याख्या (19:43)

- हमें व्याख्या के उन मूलभूत सिद्धांतों को लागू करना है जिन्हें हम बाइबल के दूसरे भागों पर लागू करते हैं।

- व्याकरण-ऐतिहासिक व्याख्या के माध्यम से भविष्यवाणी के मूल अर्थ को खोजना जरूरी है।

1. साहित्यिक संदर्भ (20:23)

हमें यह सीखना होगा कि हम बड़े अनुच्छेदों, पदों और अध्यायों, पुस्तक के भागों और यहां तक कि भविष्यवाणी की पुस्तकों की व्याख्या किस प्रकार करें।

2. ऐतिहासिक संदर्भ (21:38)

भविष्यवाणियों को उनके ऐतिहासिक संदर्भ में पढ़ने में उनकी सही व्याख्या भी शामिल होती है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

V. नए नियम के दृष्टिकोण (23:20)

A. अधिकार (23:50)

यीशु और प्रेरित पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के अधिकार से पूर्णत: आश्वस्त थे।

1. भविष्यवक्ताओं के लेख (24:05)

यीशु और उसके चेलों ने भविष्यवक्ताओं के पवित्र वचनों के प्रति अपने समर्पण की पुष्टि की।

2. भविष्यवाणिय अभिप्राय (24:58)

यीशु और उसके चेले भविष्यवक्ताओं के मूल अभिप्रायों के प्रति भी समर्पित थे।

नए नियम के लेखकों के पास पुराने नियम की मनमाने रूप में व्याख्या करने का परमेश्वर द्वारा दिया गया कोई अधिकार नहीं था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- प्रेरितों के काम 2:29-31

    - पतरस ने भजन 16 में मसीही विचारों को नहीं रखा।

    - उसने दाऊद के भविष्यवाणिय शब्दों की व्याख्या दाऊद के अनुभव और दाऊद के अभिप्रायों के प्रकाश में की।

- यूहन्ना 12:39-40

    - यूहन्ना ने यशायाह की भविष्यवाणी को उसके अपने लक्ष्यों के सुविधानुसार नहीं लिया।

    - उसने स्वयं को भविष्यवक्ता के मूल रूप से प्रेरित अभिप्रायों के प्रति समर्पित कर दिया।

B. प्रयोग (28:01)

मसीह और उसके अनुयायी परमेश्वर द्वारा उनके दिनों में किए गए कार्यों के प्रति भविष्यवाणी के शब्द को प्रयोग करने में समर्पित रहे।

1. भविष्यवाणिय अपेक्षाएं (28:33)

भविष्यवक्ताओं ने उस समय की अपेक्षा की जब परमेश्वर अपने लोगों को पुनर्स्थापित करेगा और इन सब कुछ नया कर देगा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर संसार में हस्तक्षेप करेगा और सब चीजों को उनके अंत में पहुंचाएगा।

2. भविष्यवाणिय पूर्णता (29:30)

नए नियम ने मसीह में पुराने नियम की भविष्यवाणिय अपेक्षाओं की पूर्णता को देखा।

यीशु ने बल दिया कि भविष्यवक्ताओं की व्याख्या मसीह-केन्द्रित होनी चाहिए।

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने आशा के एक मार्ग, अपेक्षा के एक मार्ग को स्थापित किया। नया नियम इनमें उस मार्ग खोजता है :

- मसीह के पहले आगमन में
- आज उसके राज्य में
- महिमा में यीशु के पुनरागमन के समय संसार के अंत में

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मसीह के अनुयायी होने के नाते हमें भी यह सीखना जरूरी है कि हम पुराने नियम की भविष्यवाणी की अपेक्षाओं को इन पर कैसे लागू करें :

- मसीह के पहले आगमन पर
- उसके राज्य की निरंतरता पर
- मसीह के द्वितीय आगमन पर

VI. निष्कर्ष (32:40)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. भविष्यवक्ताओं को समझने में हमारे असमंजस के दो मुख्य स्त्रोत कौनसे हैं?

2. इस असमंजस के परिणाम क्या हैं? इस असमंजस के प्रत्युत्तर में हमें क्या करना चाहिए?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की सही मानसिक दशा कैसी थी?

4. इस अध्याय में उल्लिखित भविष्यवाणिय प्रेरणा के दो दृष्टिकोणों में अंतर बताइए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. अपनी भविष्यवाणियों के विषय में भविष्यवक्ताओं की समझ के स्तर का वर्णन कीजिए।

6. इस अध्याय में उल्लिखित व्याख्या की दो विधियों के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. सही व्याख्या की दो विशेषताएं कौन-कौनसी हैं?

8. जब हम भविष्यवाणी के मूल अर्थ को समझने का प्रयास करते हैं तो प्रचलित व्याख्या किस प्रकार हमारे समक्ष बाधा उत्पन्न करती है? किस प्रकार सही व्याख्या हमारी सहायता करती है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. यीशु और प्रेरितों ने किस प्रकार पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के अधिकार की पुष्टि की?

10. किस प्रकार यीशु और उसके अनुयायियों ने अपने समय में हो रही घटनाओं के प्रति पुराने नियम की भविष्यवाणियों को लागू किया?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. उन समस्याओं का वर्णन करो जो ऐसी कलीसिया में उत्पन्न हो सकती हैं जिसने इस अध्याय में उल्लिखित असमंजस के प्रकारों का अनुभव किया है।

2. असमंजस के प्रति दिए जाने वाले अनुचित प्रकार के प्रत्युत्तर कौनसे हैं? इस असमंजस के प्रति प्रत्युत्तर देने का सही तरीका कौनसा है?

3. पुराने नियम की भविष्यवाणी को उदाहरण के रूप में लेते हुए स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार उस भविष्यवाणी की प्रचलित व्याख्या गलतफहमी और समस्याओं की ओर अग्रसर कर सकती है, और किस प्रकार सही व्याख्या सही समझ और सही प्रयोग की ओर अग्रसर कर सकती है?

4. मूल अर्थ के महत्व के प्रकाश में हमारे समय में हो रही घटनाओं के प्रति पुराने नियम की भविष्यवाणी को लागू करने के लिए हमें कौनसी प्रक्रिया का अनुसरण करना चाहिए?

5. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org